॥ विद्या विनयेन् शोभते ॥

JEEVANDEEP SHAIKSHANIK SANSTHA
POI'S ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, GOVELI

NAAC-Accredited

Affiliated to University of Mumbai

ONE DAY NATIONAL CONFERENCE

on

"Emerging Approaches in Humanities, Social Sciences & Commerce"

On Saturday 4th Feb. 2017

organized by

Department of Humanities, Social Sciences & Commerce

ISBN- 978-1-365-72753-5

Scanned with CamScanner

23.	केदारनाथ अग्रवाल के उपन्यास 'पतिया' में स्त्री विमर्श *संतोष नागरे*	67
24.	नासिरा शर्मा का कथा साहित्य : पारिवारिक समस्याओं के संदर्भ में *विजयकुमार राऊत*	70
25.	दलित अस्मिता – एक भंगी कुलपति की अनकही कहानी *डॉ. अनिल सिंह*	73
26.	सूर्यबाला की कहानियों में नारी चेतना *ज्योती बी. थोरात*	76
27.	मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्राम जन–जीवन *डॉ. बाळासाहेब पगारे*	79
28.	मृदुला सिन्हा की कहानियों में नारी पक्ष *साधना एस. पी. द्विवेदी*	81
29.	अल्मा कबूतरी उपन्यास में चित्रित आदिवासी नारी जीवन *सतीश मधुकर साळवे*	83
30.	मानव संसाधन विकासातील उच्च शिक्षणाची भुमिका *गरुड एस.जी.*	87
31.	सामाजिक न्यायाची संकल्पना *प्रा.डॉ.सिध्देश्वर एन.सटाले*	91
32.	**"POVERTY AND SOCIAL JUSTICE: IN INDIA"** *Prof. Kochewad Satish Dnyanoba*	94
33.	मानव संसाधन विकासातील व्यावसायीक व तंत्र शिक्षणाचीभुमिका *शिंदे ज्ञानेश्वर साहेबराव*	97
34.	सामाजिक शास्त्रात वैज्ञानिक पध्दतीचा वापरः स्वरूप व मर्यादा *किर्तीकर वाल्मीक भीमराव*	100
35.	जलव्यवस्थापन आव्हाने व उपाय *जयनाथ माणिकराव पठाड*	102

Scanned with CamScanner

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

VOLUME-II,ISSUE-VI, FEB-2017

केदारनाथ अग्रवाल के उपन्यास 'पतिया' में स्त्री विमर्श

संतोष नांगरे
सहा.प्रा. हिंदी विभाग आर.बी.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड

केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखित 'पतिया' उपन्यास १९८५ में परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास स्वर्गीय रचनाकार नरोत्तम नागर जी को समर्पित है। 'पतिया' बुंदेलखंड के ग्राम जीवन को लेकर लिखा गया स्त्री प्रधान लघु उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास की पतिया, उसकी सास, तथा ननंद मोहिनी प्रमुख स्त्री पात्र है। 'पतिया' पात्र के आधार पर प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक 'पतिया' रखा गया है। आनन्दप्रकाश इस सन्दर्भ में कहते हैं,— ''पतिया' केवल गदय रचना नहीं है, बल्कि केदार जी की रचना—धर्मिता का भी प्रतीक है।''[१] केदारजी के लेखन की सभी विशेषताएँ 'पतिया' उपन्यास में बीज रुप में पायी जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने ग्राम जीवन में प्रचलित अंधविश्वास बालविवाह, एवं बहुविवाह की कुप्रथाओं पर प्रहार करते हुए गॉव की शोषणकारी सामंतवादी व्यवस्था की पोल खोली है। जो नारी को केवल उपभोग की वस्तु समझती है। स्त्री शोषण के विविध रुपों को 'पतिया' उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है। ज्योतिष जोशी इस सन्दर्भ में कहते हैं,— ''यह उपन्यास स्त्री विमर्श को नया स्वर देता है और उसकी स्वाधीनता के अनेक आयामों को देखने—दिखाने की कोशिश भी करता है। उपन्यास में 'पतिया' नामक जिस स्त्री के संघर्ष का अंकन है, वह पुरुष की निर्भरता से मुक्त है और अपने ही परिश्रम से स्वयं के साथ—साथ पूरे परिवार का पोषण करती है। इस उपन्यास की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसकी स्त्रियॉ अपने को स्वतंत्र देखने के विपरीत पुरुष वर्ग के वर्चस्व को चुनौती देती है।''[२] पुरुषप्रधान व्यवस्था द्वारा सदियों से चले आ रहे शोषण के विरुध्द 'पतिया' उपन्यास के स्त्री पात्र आवाज उठाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास केदार जी ने अपने गॉव कमासिन की एक कहारिन के जीवन को आधार बनाकर लिखा है। पछौहा गॉव की छोटी—सी लडकी 'पतिया' बालवधू होकर कमासिन गॉव की बहू बन जाती है। उपन्यासकार ने ग्राम जीवन में प्रचलित बालविवाह की कुप्रथा की ओर संकेत किया है। कमासिन में आकर पतिया हीन ग्रंथी के शिकार अपने पति के बचकना हरकतों से भयभीत होकर अपने गॉव भाग आती है। अपनी बेटी के एकाएक बिना खबर दिये घर लौटने पर मॉ ने चिंता प्रकट करते हुए कहा, ''न माथे पर टिकुली, न हाथ में चुडियॉ। यह तू कैसे आई है? देखते हो पूरन के बाप, कुछ समझ में नही आता। तू खडी क्या है, बैठकर सब हाल बता।''[३] पतिया अपनी आपबीती सुनाते हुए कहती है की अब मैं वापस न जाऊँगी, मानो वह मौत से मुँह से भाग आयी हो। इसीलिए वह सुहाग रुपी कैद के बन्धनों से मुक्त होना चाहती है। मॉ द्वारा सोहाग चिह्न की याद दिलाने पर पतिया ने दोनों हाथों में चुडिया पहनली, तथा माथे पर बिंदिया चिपकाली। पतिया का संसार ठीक ढंग से चले इसलिए मॉ उसे जमुना नदी के किनारे लखनपुर गॉव में लगनेवाले सिंहवाहिनी देवी के मेले में ले गयी। मॉ ने वहॉ बली के बकरे के खून से पतिया की मॉग भरनी चाही। पतिया इसे सह न पायी और मॉ का हाथ झिंझोडकर बाहर निकली पडी। उपन्यासकार ने धर्म के नाम पर देवी के मंदिरों में

Scanned with CamScanner

बकरों की बली देने की कुप्रथा का विरोध किया है। पतिया अपने भाई पूरन तथा मॉ के साथ मेला देखने लगी। मेले में पतिया दीन– दुनिया से बेखबर सूत कातती औरत तथा सिर पर टोपी लगाये सिगारेट पी रहे छैलचिकनियां मर्दुवा का खिलौना खरीदती है। इन बैमैल खिलौनों के सन्दर्भ में पतिया अपनी सहेलियों से कहती है,– ''मेल–बैमैल मैं नही जानती। एक ही दुकान से तो मैं इन्हें लाई हूॅ। तू बडी सयानी निकली। जानती है, मैं इन दोनों का क्या करुॅगी? देख, इस औरत को तो उस आले में और इस मर्दुवे को चुल्हे के उपर वाले ताख पर रख दूॅगी। इसके मुॅह पर खूब धुॅआ लगेगा। बडा छैल– चिकनिया बन्ना है!''[४] पतिया का यहॉ श्रम के प्रति श्रध्दाभाव तो ऐशोराम की जिन्दगी जिनेवाले पुरुष–प्रधान संस्कृति के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है। पतिया निडर है अत: वह अपनी मॉ के साथ रात के समय खेत में रखवाली के लिए भी जाती है। एक दिन अंधेरी रात में उल्लू की बोली से भयभीत होकर दोनों मॉ– बेटियॉ डर जाती है। इसी डर ने मॉ की अंतिम सॉस छिन ली। मॉ की मृत्यु के पश्चात पतिया को ससुराल को ही अपना घर समझकर रहने की मॉ की बात बार–बार याद आती है। विवाह के पश्चात स्त्री का अपना घर भी पराया हो जाता हैऔर पराये घर मे उसे अपनापन नसीब नहीं होता। परायापन स्त्री जीवन की नियति बनकर रह जाता है। नारी जीवन की इस मूक वेदना को वाणी देते हुए पतिया कहती है,– ''मरते–मरते मर गयी, पर मॉ को समझा न आयी। अन्त समय तक यही कहती रही कि अपने ससुराल की दीवारों से जा कर सिर टकरा। इसीलिए तू ने जन्म लिया है!''[५]

अत: पतिया अपने ससुराल कमासिन लौट आती है। पतिया की सास, ननन्द मोहिनी उसे अपना लेते हैं। इस अपनाने के पीछे कई कारण थे– ''अनेक कारणों में से एक प्रमुख कारण इसका यह था कि तीनों एक ही दु:ख से दुखी थीं। वह यह कि तीनों में से किसी एक को भी ऐसा मरद–मानुस नहीं मिला था, जिसे देख कर वे संतोष की सॉस ले सकें।''[६] तीनों पुरुष–प्रधान व्यवस्था से पीडित थी। पति के निठ्ठलेपन के कारण पतिया की सास गॉव के ठाकुर रामदीन से अनैतिक सम्बन्ध रखती है। वह इस सन्दर्भ में कहती है, –''ऐसा आदमी कहीं नहीं देखा। लाज–शरम तो उसमें बिलकुल नहीं रह गई थी। उसकी ऑखों के सामने ही मैं ठाकुर रामदीन के यहॉ जाती थी और वह ऑखों पर ठीकरी रखें देखता रहता था!''[७] मोहिनी अपनी मॉ को इसके लिए स्वयं जिम्मेदार मानती हुई कहती है,– ''मॉ इसमें कुछ दोष तुम्हारा भी है। तुमने अपने हाथों ही अपना नाश किया है। ऑखे बन्द कर तुमने ठाकुर रामदीन का साथ दिया। जब–तक रंग रुप रहा, वह तुम्हारे साथ खेलता रहा। अब ऑख दिखाता है। तुम्हारी जगह यदि वह मेरे पल्ले पडा होता तो मैं ऐसा नाच नचाती कि पुरखे तक तर जाते!''[८] मोहिनी अपने ससुराल से भाग आयी है। अपने लावण्य की मोहिनी से गॉव के लोगों को मोहित कर मोहिनी अपनी जरुरतों को पूरा करती रहती है। पतिया के पति स्वामी को भगवान ने मानो लडकी बनाते–बनाते लडका बना दिया। स्वामी हीन मनोग्रंथी का शिकार है। अत: वह गरीब परिवार की लडकियों को भौतिक सुख–सुविधाओं का लालच देकर देह व्यापार की दलदल में धकेल देता है। इन सबसे हटकर पतिया चौका, बरतन, पानी भरने जैसे हाडतोड मेहनत के कार्य कर अपनी परिवार की उपजीविका चलाती है। पतिया श्रम की रोटी खाने में विश्वास रखती है। उपन्यासकार केदार जी का सौन्दर्य–बोध श्रम के साथ जुडा हुआ था। केदार जी इस सन्दर्भ में स्वयं कहतें हैं–, ''उस स्त्री का सौन्दर्य मुझे आकर्षित नहीं करता था, जो पतली, दुबली हो, सजी–सजायी हो। उस स्त्री का सौन्दर्य मुझो आकर्षित करता था जो खूब काम करती हो और बडे–बडे हंडे पानी के लेकर चलती हो। गॉव में हमारे यहॉ पीतल के बडे–बडे हंडे थे, दो सिर पर लिए और एक–हाथ में लटकाए, एक इधर.... उसको मैं कभी नहीं भूलता।''[९] पतिया मोहिनी को समझाती है कि वह अपना रास्ता छोड दे। किन्तु मोहिनी श्रम करना नहीं चाहती, उसकी अपनी दूसरी ही दुनिया थी। वह कहती है, ''सच कहती हूॅ, भौजी, चौका– बासन करते–करते मर जाओगी, फिर भी तुम्हें इतना नहीं मिलेगा जो..... यकी न हो तो आजमा कर देख लो। चौका बरतन करके तुम इतना भी न पा सकोगी जितना कि मैं दो–चार बार इधर से उधर ऑख मटका कर।''[१०]

गॉव का ठाकुर रामदीन शोषणकारी सामंतवादी व्यवस्था का प्रतीक है। जो गॉव की बहु– बेटियों की इज्जत के साथ खेलता रहता है। ठाकुर रामदीन अत्यधिक संशयी एवं लोभी है। इसीलिए वह अपनी तीनों पत्नियों का यौन शोषण कर उन्हें जहर देकर मार डालता है। मोहिनी की मॉ का यौन शोषण कर अब उसकी कुदृष्टि मोहिनी पर पडती है। कई बार वह इसका

Scanned with CamScanner

जिक्र मोहिनी की माँ से करता भी है। मोहिनी की माँ कामांध ठाकुर का विरोध करती हुई कहती है,—''सच कहती हूँ, सरकार! — अगर आप चाहें तो मोहिनी को आपके कदमों पर लाकर डाल सकती हूँ, और इसके बाद मोहिनी के बाल जब पकने लगें तो.....!''[११] सामंतवादी व्यवस्था में नारी सिर्फ एक उपभोग की वस्तु बनकर रह जाती है। डॉ.अशोक त्रिपाठी संवेदनाहीन सामंतवादी व्यवस्था की पोल खोलते हुए कहते हैं,—''तत्कालीन सामंतवादी सोचवाली सामाजिक व्यवस्था की अनेक विसंगतियों और उसके अन्तर्विरोधों को तथा सामंती व्यवस्था में नारी की क्या हैसियत थी उसका प्रामाणिक चित्रण हुआ है।''[१२] मोहिनी ठाकुर रामदीन के मोहपाश में फँस जाती है। इस आघात से मोहिनी की माँ बीमार हो जाती है। ठाकुर रामदीन मोहिनी का यौन शोषण कर उसे भी जहर देकर मार डालना चाहता था किन्तु मोहिनी बडी होशियारी से ठाकुर के जेवर एवं गहने लेकर भाग निकलती है। इधर पतिया का पति स्वामी अपनी माँ के पडोसी गाँव जाने तथा पतिया के घर में अकेले होने का लाभ उठाकर एक ग्राहक को लेकर घर आता है। पतिया रात के समय पति की इस घिनौनी हरकत से घबरा जाती है, तभी अचानक ठाकुर रामदीन के आदमी मोहिनी की तलाश में घर में घूस आते हैं। पतिया इस सुअवसर का लाभ उठाती हुई अपनी इज्जत बचाते हुए घर से भाग निकलती है। स्टेशन पर उसकी भेंट मोहिनी से होने पर दोनों ने संतोष की साँस ली। मौत के मुँह से सही—सलामत बाहर निकलकर दोनों ने रेल में बैठकर शहर की ओर प्रस्थान किया। रास्तें में दोनों एक—दूसरे को अपनी आपबीती सुनाती रही। पतिया द्वारा ठाकुर रामदीन के सन्दर्भ में पूछें जाने पर मोहिनी ने कहा,—''छोडो भी उस कलमुँहे की बात पतिया भौजी। कंजूस मक्खी—चूस कहीं का, जेवर गहने तो सब समेट लायी, बस एक बात मन की मन में रह गयी— उस्तरा होता तो उसकी नाक, कान और मूँछों के बाल काटकर गठरी में बाँध लाती। खूसट कहीं का, मुझे जहर देने की सोच रहा था— जान से मारना चाहता था।''[१३] उपन्यासकार की स्त्री शक्ति के प्रति अपार श्रध्दा तथा दृढ विश्वास व्यक्त हुआ है। शहर में पहुँचकर मोहिनी ने समाज के बीच अपनी सौन्दर्य की मोहिनी को प्रतिष्ठित किया तो पतिया अब भी चौका बरतन कर अपनी उपजीविका चला रही है। पतिया के श्रम करते छोटे हाथों में नयी दुनिया का सृजन करने की अपार क्षमता है। तभी तो मोहिनी कहती है,—''और तुम— और तुम्हारे हाथ क्या कुछ कम मजबुत है? कितना काम करती हो तुम इन हाथों से। चाहो तो दुनिया को उलट— पलट डालो।''[१४] उपन्यासकार की श्रम के प्रति अटुट आस्था अभिव्यक्त हुई है। केदार जी ने अपनी कई कविताओं में श्रम की महत्ता का प्रतिपादन किया है। केदार जी अपनी 'छोटे हाथ' शीर्षक कविता में कहते हैं,—

''छोटे हाथ—निडर रहते हैं,जोखिम में घूमा करते हैं।/नागों को नाथा करते हैं, कॉटों को चुमा करते हैं।।
बारुदी बंदूकें तानें, पशुओं को मारा करते हैं।/तूफानी सागर से सबको, साहस से तारा करते हैं।।''[१५]

सारांश :

केदारनाथ अग्रवाल जी ने 'पतिया' उपन्यास के माध्यम से ग्रामीण स्त्री जीवन की शोषण एवं संघर्षगाथा को जीवंत भाषा में हमारे सामने रखा। 'पतिया' उपन्यास ग्रामीण स्त्री की त्रासदी का विवेचन करनेवाला एक महत्वपूर्ण दस्वावेज है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. सम्पा. अजय तिवारी, केदारनाथ अग्रवाल (मूल्यांकन परक लेखों का संग्रह) पृ.१७८
२. सम्पा. ज्योतिष जोशी, केदारनाथ अग्रवाल रचना—संचयन, पृ.३८
३. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया, पृ.१४
४. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.४१
५. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.६४
६. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.६८
७. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.७०
८. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.७०
९. सम्पा. अजय तिवारी तथा इब्बार रब्बी, कवि मित्रों से दूर,पृ.४२
१०. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.८०
११. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.७९
१२. सम्पा. अशोक त्रिपाठी, संचयिता केदारनाथ अग्रवाल, पृ.७०
१३. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.११७
१४. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया पृ.१३०
१५. केदारनाथ अग्रवाल, गुलमेंहदी, पृ.१३४—१३५

Scanned with CamScanner